|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| 31. August 2025 | | | |
| **22. Sonntag im Jahreskreis C** | | | |
| Erste Lesung: Sir 3,17-18.20.28-29; Zweite Lesung: Hebr 12,18-19.22-24a; Evangelium: Lk 14,1.7-14 | | | |
|  |  | |  |
| Eröffnung: | GL 142, 1+2 | | Zu dir, o Gott, erheben wir |
|  | GL 417, 1-4 | | Stimme, die Stein zerbricht |
|  |  | |  |
| Kyrie: | GL 128 | | Herr, erbarme dich |
|  |  | |  |
| Gloria: | GL 168, 1+2 | | Gloria. Ehre Gott in der Höhe |
|  |  | |  |
| Antwortgesang: | Psalm 68, 4-7. 10-11 | |  |
|  | Kehrvers: | |  |
|  | GL 646, 2 | | Den Geist seines Sohnes |
|  | oder | |  |
|  | GL 400, 1+2 | | Ich lobe meinen Gott |
|  |  | | |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 7 |  | |
|  | Vers: |  | |
|  | *So spricht der Herr:* | | |
|  | *Nehmt mein Joch auf euch und lernt von mir:* | | |
|  | *denn ich bin gütig und von Herzen demütig.* | | |
|  |  |  | |
| Credo: | GL 491, 1+2! | Ich bin getauft | |
|  |  |  | |
| Gabenbereitung: | GL 146, 1+2+4 | Du rufst uns, Herr, an deinen Tisch | |
|  | GL 186, 1-3 | Was uns die Erde Gutes spendet | |
|  |  |  | |
| Sanctus: | GL 129 | Heilig | |
| Agnus Dei: | GL 203 | O Lamm Gottes | |
|  |  |  | |
| Danksagung: | GL 216, 2+3 | Mir armen Gast bereitet hast | |
|  | GL 357, 2+7 | Du meine Perl, du werte Kron | |
|  |  |  | |
| Schluss: | GL 479, 1-3 | Eine große Stadt ersteht | |